P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-5* January- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जनपद रूद्रप्रयाग में भौगोलिक स्वरूप अनुरूप सांस्कृतिक धरोहर

Cultural Heritage According to Geographical Form in Rudraprayag District

Paper Submission: 05/01/2020, Date of Acceptance: 15/01/2020, Date of Publication: 20/01/2020

मंजू पुरोहित
सहायक अध्यापिका (सामान्य)
भूगोल विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोपेश्वर
चमोली, उत्तराखंड, भारत

राजेश भट्ट
असिस्टेंट प्रोफेसर
भूगोल विभाग
हि0क0च0कु0ब0
राजकीय महाविद्यालय
नागनाथ, पोखरी,
चमोली, उत्तराखंड, भारत

सारांश

संस्कृति मानव की सामाजिक विरासत है जो प्रकृति तथा समाज की देन है। अकेला मनुष्य संस्कृति का निर्माण नहीं करता वह जिस प्रकार के समाज में रहता है, उसी प्रकार की संस्कृति को अपनाता है, तथा अपनी संस्कृति के आधार पर ही सारे क्रिया-कलाप करता है और उसी के अनुसार अपने आपको समायोजित करता है। संस्कृति लगातार आगे को हस्तांतरित होती है। इस प्रकार किसी भी क्षेत्र को सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझने के लिए संस्कृति शब्द का अर्थ समझना आवश्यक हो जाता है। मानव प्राकृतिक वातावरण में रहते हुए अपने संस्कारों के द्वारा नवीन सांस्कृतिक प्रतिरूपों को जन्म देता है, जिससे सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का निर्माण होता है। विभिन्न क्षेत्रों की अपनी-अपनी भिन्न संस्कृति होती है जिसके द्वारा वे अलग-अलग संस्कृति से पहचाने जाते हैं। जैसे हिमालय के पर्वतीय क्षेत्र में ही पूरब हिमालय में अरूणाचली, आसामी, मणिपुरी, नागा इत्यादि मध्यहिमालय में नेपाली, गढवाली, कुमाऊनी तथा उत्तर हिमालय में कश्मीरी लोग उनकी अलग-अलग संस्कृति से पहचाने जाते हैं। इस प्रकार से जनपद रूद्रप्रयाग भी पश्चिम हिमालय में गढ़वाली संस्कृति के अन्तर्गत अपनी अलग सी पहचान बनाये हुए है।

Culture is the social heritage of human beings which is the gift of nature and society. Man alone does not create culture, he adopts the type of culture in which he lives, and does all the activities on the basis of his culture and adjusts himself accordingly. Culture is constantly passed on. Thus, to understand the cultural background of any area, it becomes necessary to understand the meaning of the word culture. While living in the natural environment, humans give birth to new cultural patterns through their rituals, which creates the cultural background. Different regions have their own distinct culture by which they are identified with different cultures. Like in the mountainous region of the Himalayas, Arunachal, Assamese, Manipuri, Naga etc. in the Eastern Himalayas, Nepali, Garhwali, Kumaoni in the Central Himalayas and Kashmiri people in the North Himalayas are recognized by their different cultures. In this way, Rudraprayag district has also maintained its own identity under the Garhwali culture in the Western Himalayas.

मुख्य शब्द : सास्कृतिक धरोहर, मन्दिर, पंचबद्री, पंचकेदार, पंचप्रयाग।।

Keyword: Cultural heritage, Temples, Panch Badri, Panchkedar, Panchprayag.

प्रस्तावना

उत्तराखण्ड़ में पंचकेदार, पंचबद्री और पंचप्रयाग हैं। पंचप्रयाग में देवप्रयाग, रूद्रप्रयाग, कर्णप्रयाग, नन्दप्रयाग एंव विष्णुप्रयाग स्थित हैं। गढ़वाल क्षेत्र के प्रमुख विष्णु प्रयाग में धौली गंगा, नन्दप्रयाग में नंदाकिनी नदी, कर्णप्रयाग में पिण्ड़र नदी तथा रूद्ररप्रयाग में मंदाकीनी नदी अलकनन्दा से मिलकर प्रयाग (संगम) बनाती है। देवप्रयाग में अलकनन्दा और भागीरथी के महामिलन के बाद पावन गंगा नदी कहलाती है।

केदारनाथ धाम- केदारनाथ जनपद रूद्रप्रयाग का मुख्य शिवधाम है। मंदिर नागर शैली मे बना है। पौराणिक मान्यता के अनुसार नर-नारायण की तपस्या से प्रसन्न होकर वरदान

स्वरूप आशुतोष महादेव ने इस स्थान पर मानव कल्याण हेतु सदैव निवास करने का वचन दिया था। यहां शिव के 12 ज्योतिर्लिगों में से एक प्रमुख ज्योतिर्लिगं है। यहां अखण्ड ज्योति के दर्शन विशेष शुभ है। सभा मण्डल में पाण्डवों और श्री कृष्ण, कुन्ति, पार्वती, बभ्रुवाहन, भैरवनाथ, लक्ष्मी, नन्दी की आर्कषक शिव के 12ज्योतिर्लिगों में से एक है। पंाडवों ने शिव मंदिर की नींव यही पर रखी, इसी पवित्र स्थान पर आठवीं सदी में आदि गुरू शकराचार्य ने नींव रखी है। मंदिर के पृष्ठ भाग में अमृत कुण्ड, ईशान कोण मे ईशानेश्वर महादेव, शकराचार्य समाधि मंदिर और पूरब दिशा में पहाड़ी पर भैरव शिला मन्दिर स्थित है। मन्दिर के सम्मुख पुरी में गंगा माई मन्दिर, उदक कुण्ड, नवदुर्गा मन्दिर, सत्यनारायण मन्दिर पंचमुखी महादेव तथा अन्नपूर्णा मन्दिर दर्शनीय है।

मधमेहश्वर मन्दिर- मधमेहश्वर मन्दिर धार्मिक आस्था का प्रमुख मन्दिरों मे से एक शिव का मन्दिर है। यहां पर 16 किमी० की दूरी पैदल यात्रा है। घोड़े, खच्चर वालों का एक तरफा किराया 2500 रू0 है। चौखम्बा की गोद में समुद्रतल से 9700 फीट की ऊँचाई पर स्थित द्वितीय केदार माना जाने वाला यह शिव नाभि का मन्दिर ऊखीमठ से 30 किमी० की दूरी पर है। यहां अन्य मन्दिरों में बूढा मधमेहश्वर, श्रेत्रपाल मन्दिर, हिंवाली देवी मन्दिर है। यहां की पहाड़ियों में अनेक गुफाएं हैं जिनमें राजा यशोधवल कालीन अनेक अस्त्र-शस्त्र हैं। यहां अलग-अलग कालों के अत्यन्त प्राचीन सिक्के अभी भी सुरक्षित हैं। भगवान मधमेहश्वर की प्रतीमा शीतकाल में (नवम्बर) ऊखीमठ गद्दी मे छः माह की पूजा अर्चना हेतु लाई जाती है। इस अवसर पर मेले का आयोजन भी किया जाता है। पुजारी की नियुक्ति रावल द्वारा की जाती हैं। पंचकेदार के नाम से विख्चात शिव के 5 पावन धाम में से मधमेहश्वर दूसरा धाम है। यहाँ पर रात को रासी गाँव तक ठहरा जा सकता है यहाँ भोजन सस्ता व ठहराव सस्ता है।

पंचकेदारों में तृतीय तुंगनाथ समुद्रतल से 12070 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। ऊँखीमठ-गोपेश्वर सड़क पर 30 किमी० की दूरी पर चोपता पर्यटक स्थल से 350 किमी० पैदल मार्ग से यहां पहुंचा जा सकता है। यहां के अन्य मन्दिरों में भूतनी देवी एवं भैरवनाथ मन्दिर, बुद्ध प्रतिमा हैं।

मन्दिर से कुछ ही दूरी पर चन्द्रशिला पर्वत विख्यात है। मन्दिर के निकट ही रावण शिला भी है। यह मान्यता है कि लंका पति रावण ने इस शिला पर शिव की तपस्या की थी। तुंगनाथ से 2 किमी० की दूरी पर चंद्रशिला मन्दिर है। चंद्रमा ने अपने क्षय रोग को दूर करने के लिए शिवजी की आराधना की तथा कुछ समय बाद उनका क्षय रोग दूर हो गया इस स्थान को मून रॉक भी कहते हैं।

इस स्थान से नन्दादेवी, पंचशूली, गंधमानदन, दोणांचल, केदारनाथ, बद्रीनाथ और गंगोत्री की हिमाच्छादित हिम श्रृंखलाएं अनुपम छटा बिखेरती हुई दर्शकों को मंत्रमुग्ध करती है।

ओंकेरेश्वर मन्दिर ऊखीमठ- रूद्रप्रयाग से 42 किमी० दूर ओंकेरेश्वर शिव का प्रसिद्ध मन्दिर है। प्रचलित धारणा के अनुसार इस मन्दिर का निर्माण शंकराचार्य द्वारा कराया गया है। यह

मन्दिर ऊषा गठ परिसर में स्थित है। ऐसा कहा जाता है कि बाणासुर की पुत्री ऊषा का विवाह इसी स्थान पर सम्पन्न हुआ था। मन्दिर के नीचे विवाह की बेदी अभी भी है।

इस मन्दिर में शीतकाल में केदारनाथ तथा मधमेहश्वर के पट बन्द होने के बाद उनकी डोली तथा मूर्ति इस मन्दिर में स्थापित हो जाती है तथा पट खुलने तक छः माह इसी मन्दिर में भगवान केदारनाथ एंव मधमेहश्वर की पूजा एंव दर्शन होते हैं।

गुप्तकाशी विश्वनाथ मन्दिर- विश्वनाथ मन्दिर रूद्रप्रयाग-गौरीकुण्ड मार्ग पर रूद्रप्रयाग से 42 किमी० दूर गुप्तकाशी में स्थापित है। प्रचलित मान्यता के अनुसार (गुप्त वाराणसी) तीकाशियों- वाराणसी (काशी), उत्तरकाशी और गुप्तकाशी में से एक है। यह मन्दिर समुद्र तल से 4850 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। मन्दिर नागर शैली कत्यूरी शिखर प्रकार का है। किवदंती के अनुसार भगवान शिव ने यहां पर गुप्तवास किया था। मन्दिर के सम्मुख मनकर्णिका कुण्ड है। जिसमें गंगा-यमुना की पवित्र जल धाराएं गिरती हैं। मन्दिर के पास ही अर्द्धनारीश्वर मन्दिर, चन्द्रशेखर महादेव मन्दिर और पाण्डवों की मूर्तियां दर्शनीय है। यहां से चौखम्बा, देवरियाताल, केदारनाथ हिमशिखर, तुंगनाथ, मध्यमहेश्वर पर्वत श्रृंखलाएं पर्यटकों को आकर्षित करती हैं।

रूद्रनाथ मन्दिर, रूद्रप्रयाग- अलकनन्दा और मन्दाकिनी नदियों के संगम पर प्राचीन रूद्रप्रयाग मन्दिर समुद्र तल से 610 मी० की ऊँचाई पर स्थित है। मन्दिर का गर्भगृह सामान्य है जिस पर एक फुट ऊँचा लिंग है तथा पास ही 2 फुट ऊँची श्री गणेश व एक फुट ऊँची देवी पार्वती की प्राचीन मूर्ति है खुले मण्डल में दो नन्दी हैं जिनके बीच में चरण चिन्ह (गुरूप्रतीक) भी बने हैं। मन्दिर के दांयी और बांयी दिशा में शिव और लक्ष्मी नारायण मन्दिर है। स्कन्ध पुराण के केदारखण्ड के अनुसार इस स्थान पर एक पाद होकर महर्षि नारद की तपस्या से प्रसन्न होकर, रूद्र ने उन्हें दर्शन देकर संगीत के रागों का ज्ञान दिया था। रूद्रनाथ मठ मन्दिर और संगम के मध्य श्री जगदम्बा देवी मंदिर है जिसे नव दुर्गा मन्दिर भी कहते हैं।

कोटेश्वर महादेव-रूद्रनाथ मुख्यालय से 5 किमी० उत्तर-पूर्व की ओर अलकनन्दा के तट पर कोटेश्वर नामक अति प्राचीन मन्दिर गुफा के अन्दर स्थित है। इस गुफा में स्फटित शिवलिंग है। स्थानीय मान्यता के अनुसार विधा प्राप्ति, ऐश्वर्य प्राप्ति, सन्तान प्राप्ति की कामना लेकर शिवरात्रि और श्रावण मास के इस मन्दिर में शिवअर्चना सकल मकोरथ पूर्ण करने वाला है।

साणेश्वर महादेव मन्दिर- विकास खण्ड अगस्त्यमुनि के अन्तर्गत मंदाकिनी के दायें पार्श्व में ग्राम सिल्ला में यह प्राचीन मंदिर है। यहां 12 वर्ष यज्ञ का आयोजन करने की परम्परा है। स्थानीय परम्परा के अनुसार यज्ञ के अवसर पर कूष्माण्डा देवी को बुलाया जाता है।

बाणासुर गढ़मन्दिर (लमगौण्डी-बामसू)-गुप्तकाशी-बसुकेदार मोटर मार्ग पर प्राचीन बाणासुर मन्दिर राजकीय इण्टर कॉलेज लमगौण्डी से मिला हुआ है। प्रचलित मान्यता के अनुसार यहा बाणासुर नामक असुर राजा की राजधानी थी तथा इस मन्दिर की स्थापना बाणासुर के द्वारा ही की गई थी।

जमदग्नेश्वर (जामू) मन्दिर- रूद्रप्रयाग-गौरीकुण्ड मोटर मार्ग पर फाटा से आधा किमी० ऊपर जमदग्नि ऋषि का आश्रम है। प्रचलित मान्यता के अनुसार यहां ऋषि व उनकी पत्नी रेनुका ने तप किया था। शिव के प्रसन्न होने पर रेनुका ने वरदान पाया और "परशुराम" को जन्म दिया जिन्होंने समस्त क्षत्रियों का मानमर्दन किया था। आश्रम में ज्योतिर्लिंग भी स्थित है।

कैलाश महादेव सोनप्रयाग-वासुकीताल से निसृत सोन गंगा (बासुकी गंगा) और चौरावारी (गांधी सरोवर) झील से निकली मंदाकिनी का अनुपम संगम स्थल सोनप्रयाग में कैलाश महादेव और गरूड़ जी का मन्दिर स्थित है।

फलासी का तुंगनाथ मन्दिर- रूद्रप्रयाग-चोपता मोटर मार्ग पर ग्राम फलासी में तुंगनाथ का मन्दिर स्थित है। इस मन्दिर में जाने के लिए चोपता से 1 किमी० पैदल चलकर पहुंचा जा सकता है।

रूच्छ महादेव मन्दिरकोटिमाहेश्वरी-रूद्रप्रयाग-ऊखीमठ मार्ग पर कविल्ठा ग्राम से 4 किमी० उत्तर दिशा की ओर रूच्छ महादेव नामक प्राचीन शिव मन्दिर स्थित है। स्थानीय मान्यता के अनुसार इस मन्दिर के दर्शन से काशी के विश्वनाथ मन्दिर के दर्शनों का फल प्राप्त होता है।

कालशिला मन्दिर-रूद्रप्रयाग-कालीमठ मोटर मार्ग पर काली शिला मंदिर समुद्र तल से लगभग 8000 फीट की ऊँचाइ पर कालीमठ से लगभग 06 किमी0 पूरब की ओर खड़ी चढ़ाई व्यूँखी गांव के ऊपर है। प्रचलित मान्यता के अनुसार ब्रहमा जी से वरदान पाकर गर्वित असुर रक्त बीज के विनाश के लिए देवी दुर्गा इसी शिला पर महाकाली के रूप में अवतरित हुई थी तथा महाकाली के रूप में उन्होंने अपना विशाल आकृति का मुंह फैलाकर रक्त बीज के रक्त को चाटना शुरू किया ताकि अन्य रक्तबीज पैदा न हो, इस तरह रक्तबीज का अंत हुआ था।

कालीमठ सिद्धपीठ- उत्तराखण्ड के प्रमुख सिद्धपीठों में कालीमठ प्रसिद्ध है। रूद्रप्रयाग-गुप्तकाशी मोटर मार्ग पर गुप्तकाशी से 10 किमी0 की दूरी पर नागर शैली का मन्दिर भक्तों की मनोकामना को शीघ्र पूर्ण करने वाला है। यहां पर महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती मन्दिर के अलावा हर गौरी मन्दिर, भैरव मन्दिर, मातंग शिला प्रमुख है। मन्दिर के मध्य में एक कुण्ड है जो रजट पट से आच्छादित रहता है और शरद नवरात्रों में कालरात्रि को खोला जाता है।

मनणी देवी मन्दिर- ऊखीमठ-जुगासू मोटर मार्ग पर जुगासु से 23 किमी0 पूर्वोत्तर क्षेत्र में खमण्डना देवी पर्वत क्षेत्र में रणमनणी देवी मंदिर अवस्थित है। इस मन्दिर के पास ही खाम बुग्याल के मनमोहक पुष्प तथा सौन्दर्य पर्यटकों को आत्मविभोर करता है।

शाकम्बरी देवी मन्दिर-रामपुर-त्रियुगीनारायण मोटर मार्ग पर त्रियुगीनारायण से पहले शाकम्बरी देवी का मन्दिर स्थित है। एक प्राचीन मान्यता के अनुसार यहां पर शाकम्बरी देवी ने कन्द-मूल फल खाकर अनेक वर्षो तक तप किया था।

गौरी देवी मन्दिर- रूद्रप्रयाग-गौरीकुण्ड मोटर मार्ग पर गौरीकुण्ड में गौरा देवी का मन्दिर स्थित है। यह मन्दिर समुद्रतल से 6500 फीट की ऊँचाई पर स्थित है। यहां पर गौरी पार्वती ने प्रथम ऋतु स्नान किया था। यहां गर्म जल कुण्ड और ठंडा जल कुण्ड है। यहां पर गौरी

प्रतिमा, गौरीश्वर महादेव, उमा-माहेश्वर शिला, राधा-कृष्ण प्रतिमा, ज्वाला भवानी प्रतिमा और भैरव की प्रतिमाएं दर्शनीय हैं।

दुर्गा देवी मन्दिर (फेगू)-गुप्तकाशी-डडोली मोटर मार्ग पर नागजगई से 1.5 किमी0 पूर्व दिशा में फेतकारिणी पर्वत पर प्राचीन दुर्गादेवी का प्रसिद्ध मन्दिर है। इस स्थान पर बैशाखी पर्व पर स्थानीय मेला लगता है। इस पर्वत के शिखर पर दुर्गेश्वर महादेव और 6 किमी0 पूवोत्तर में महादेवी का मन्दिर है। फेलकारिणी पर्वत पर दानवती जलधारा निकलती है।

तालतोली राजराजेश्वरी देवी मन्दिर- गुप्तकाशी-डडोली मोटर पर ल्वारा से 1.5 किमी0 दूरी पर पश्चिमोत्तर दिशा में ल्वाणी ग्राम से होकर करीब 5000 फीट की ऊँचाई पर प्रसिद्ध राजराजेश्वरी देवी मन्दिर है। मन्दिर प्रांगण में राम नवमी को प्रसिद्ध स्थानीय मेला लगता है। यहां से ऊखीमठ, देवरियाताल, तुंगनाथ, काली शिला, मधमेहश्वर की दृश्यावलियां प्रकृति प्रेमियों के मन आत्मविभोर कर देती है।

राकेश्वरी देवी मन्दिर- गुप्तकाशी-कालीमठ मोटर मार्ग पर गुरू बृहस्पति द्वारा शापित चन्द्रमां और तारा का मन्दिर कालीमठ से 11 किमी0 पूरब में स्थित है। प्रचलित मान्यता के अनुसार गुरू पत्नी तारा और चन्द्रमां परस्पर आकर्षित हुए तारा गर्भतवी हुई यह जान कर गुरू बृहस्पति ने चन्द्रमां को शाप दिया। चन्द्रमा ने शिव की स्तुति कर शाप निवारण चाहा, शिव ने काली क्षेत्र में काली की पूजा हेतु चन्द्रमां को आदेश दिया कि प्रतिमा प्रतीक रूप में इस मन्दिर की अनुपम धरोहर है।

ललिता देवी मन्दिर (नाला)- रूद्रप्रयाग-केदारनाथ मोटर मार्ग पर गुप्तकाशी से 2 किमी0 केदारनाथ मार्ग पर नाला ग्राम में (राजा नल की नगरी) नल दमयन्ती का प्रसिद्ध मन्दिर है और ललिता देवी का मन्दिर है। इस मन्दिर में शिव पार्वती की प्रतिमाएं दर्शनीय हैं। यह मन्दिर कत्यूरी राजाओं से सम्बन्धित है जिसमें कई खण्डित मूर्तियां हैं जिन्हें रूहेलों ने तोड डाला था।

अष्टभुजा दुर्गा मन्दिर त्यूंग- रूद्रप्रयाग-गौरीकुण्ड मोटरमार्ग पर नारायण कोटि से 2.5 किमी0 दूरी पर ब्यूंग में अष्टभुजा दुर्गा देवी का प्राचीन मन्दिर है।

महिषमर्दिनी देवी मन्दिर- रूद्रप्रयाग-गौरीकुण्ड मोटर मार्ग पर ब्यूंग से 4 किलोमीटर आगे महिषखण्ड पर्वत पर महिषमर्दिनी देवी का मन्दिर है। स्थानीय मान्यता के अनुसार मैखण्डा महिषासुर दानव की राजधानी थी। इस पर्वत पर ब्यास गुफा और दक्षिण दिशा में वेद माता गायत्री का मन्दिर तथा सावित्री जलधारा बहती है।

नारी देवी मन्दिर- रूद्रप्रयाग-मोहनखाल मोटर मार्ग पर सतेराखाल से 1 किमी0 पश्चिम में नारी देवी का मन्दिर स्थित है। स्थानीय मान्यता के अनुसार इस मन्दिर में दर्शन करने से मनुष्य के पाप, ताप और संताप कट जाते है।

राजराजेश्वरी देवी मन्दिर-चन्द्रापुरी-मोहनखाल मोटर मार्ग पर कण्डारा ग्राम में राजराजेश्वरी देवी का प्रचीन मन्दिर है।

दूण गधेरा देवी- रूद्रप्रयाग-गौरीकुण्ड मोटर मार्ग पर रामपुर से 10 किमी0 पश्चिमोत्तर में दूण गधेरा देवी का प्राचीन मन्दिर है।

हरियाली देवी मन्दिर-हरियाली देवी मन्दिर 58 सिद्ध पीठों में एक है नगरासू-डाण्डाखाल मोटर मार्ग पर जसोली ग्राम मंे हरियाली देवी का सिद्ध मन्दिर है। जिला मुख्यालय रूद्रप्रयाग से पूर्व दिशा में लगभग 17 किमी0 पैदल चढ़ाई, चलकर मां हरियाली देवी सिद्ध मन्दिर में पहंुचा जा सकता है। ऐसी मान्यता है कि इस मन्दिर में श्रद्धा पूर्वक मां के दर्शन करके पूजन करने से मनुष्य की सभी मनोकामना पूर्ण हो जाती है। जब कंस ने देवकी की आठवीं संतान को धरती पर पटका तो मधमाया का हाथ गिरकर जसोली पहुंचा तभी हरियाली मंदिर की स्थापना हुई।

मैठाणा देवी मंदिर- तिलवाड़ा-सौंराखाल मोटर मार्ग पर भरदार पट्टी में धंधड़खाल से 5 किमी0 दूरी पर मैठाणा देवी का प्रसिद्ध मंदिर है। दशहरे के अवसर पर यहां पर श्रद्धालुओं का तांता लगा रहता है।

उफरैं देवी मन्दिर- रूद्रप्रयाग-गौरीकुण्ड मोटर मार्ग पर रूद्रप्रयाग संगम से 3 किमी0 की चढ़ाई पर ग्राम सभा दरमोला में या प्रसिद्ध मन्दिर अवस्थित है। इस मन्दिर में प्रत्येक 12 वें वर्ष यज्ञ योजन किया जाता है।

कूष्माण्डा देवी मन्दिर- रूद्रप्रयाग-गुप्तकाशी मोटर मार्ग पर पट्टी सिलगढ़ के कुमारी गांव कुष्माण्डा देवी का प्राचीन मन्दिर स्थित है।

दुर्गा देवी मन्दिर- रूद्रप्रयाग-चोपता मार्ग पर स्थानीय मान्यता का प्रतीक माता दुर्गा देवी का प्राचीन मंदिर चोपता दुर्गाधार है।

कार्तिकेय स्वामी मंदिर- रूद्रप्रयाग-दशज्यूला काण्डई मोटर मार्ग पर कनकचौंरी से 3 किमी0 ऊँची पहाड़ी पर शिवपुत्र कार्तिकेय का भव्य मंदिर है। यहां पर कार्तिकेश्वर महादेव मन्दिर, भैरवनाथ मन्दिर, हनुमान मन्दिर तथा ऐडी आंछरियों के मन्दिर हैं। यहां से चौखम्बा पर्वत श्रृंखला, केदारनाथ सुमेरू पर्वत श्रृंखला, नन्दा देवी गंगोत्री पर्वत श्रृंखला का दृश्य दर्शनीय है।

त्रियुगीनारायण मन्दिर- शैल पुत्री के रूप में शिव पार्वती माता का विवाह यही पर हुआ था रामपुर-त्रियुगीनारायण मोटर मार्ग पर त्रियुगीनारायण का मन्दिर है। यह शिव और वैष्णव दोनों सम्प्रदायों की आस्था के केन्द्र है। स्थानीय मान्यता के अनुसार सतयुग में यहां शिव-पार्वती का विवाह हुआ और उस अवसर पर प्रज्वलित अग्नि धूनी अभी तक निरन्तर जल रही है। यह अग्नि ऋषि मुनियों ने वेद मंत्रों से प्रज्जवलित की थी।

उमरानारायण मंदिर- रूद्रप्रयाग-चोपड़ा मोटर मार्ग पर कोटेश्वर से लगभग 3 किमी0 की दूरी पर उमरानारायण मन्दिर स्थित है। यह भगवान विष्षु का प्राचीन मन्दिर है। ऐसी मान्यता है कि इस मन्दिर में नारायण दर्शन से भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती हैं।

अगस्त्यमुनि मन्दिर- रूद्ररप्रयाग-गौरीकुण्ड मोटर मार्ग पर मंदाकिनी नदी के तट पर मंदाकिनी नदी के तट पर अगत्स्यमुनि में महर्षि अगस्त्य का प्राचीन मन्दिर है। इस मन्दिर में महर्षि की प्रतिमा स्थित है। मन्दिर के पास ही अगस्त्य धोंधा जी की प्रतिमा भी है।

हनुमान मन्दिर- रूद्रप्रयाग-गौरीकुण्ड मोटर मार्ग पर रूद्रप्रयाग में संगम से करीब 1.5 किमी0 पहले अलकनन्दा नदी के दायें ओर हनुमान जी का मन्दिर स्थित है।

पिल्लू, कर्मजीत मन्दिर- रूद्रप्रयाग-चन्द्रापुरी मोटर मार्ग पर चन्द्रापुरी से पैदल लगभग 7 किमी पूर्व दिशा की ओर पिल्लू गांव में नाग देवता का प्राचीन मन्दिर है।

मणिगुह मन्दिर- रूद्रप्रयाग-गौरीकुण्ड मोटर मार्ग पर सौड़ी से लगभग 6-7 किमी0 की चढ़ाई पार कर पूरब की ओर मणिगुह गांव में शिवपुत्र कार्तिकेय का मूल मन्दिर है।

नारायण मन्दिर- रूद्रप्रयाग-गौरीकुण्ड मोटर मार्ग पर सौडी से पैदल भटवाड़ी (मणिगुह) ग्राम में नारायण विष्णु मन्दिर है।

ऋषि रणजीत मन्दिर- अगस्त्यमुनि-डडोली मोटर मार्ग पर रायड़ी गांव में ऋषि रणजीत का मन्दिर स्थित है। स्थानीय मान्यता के अनुसार ऋषि रणजीत, अगस्त्य ऋषि के भाई थे। इनके एक अन्य भाई साणेश्वर जी भी हैं।

नागनाथ मन्दिर- गुप्तकाशी-डडोली मोटर मार्ग पर छेनागाड़ नामक स्थान से 8 किमी0 की पश्चिमोत्तर दिशा में धंधासू बांगर में नागनाथ मन्दिर है।

भीम सेन मन्दिर- रूद्रप्रयाग-बद्रीनाथ मोटर मार्ग पर ग्राम कोठगी में भीमसेन मन्दिर स्थित है। इस मन्दिर में एक शिवालय है। स्थानीय मान्यता के अनुसार इस मन्दिर में दर्शन मात्र से भक्तों के कष्टों का निवारण हो जाता है।

जाख देवता मन्दिर- रूद्रप्रयाग-गुप्तकाशी मोटर मार्ग पर नारायण कोटी से लगभग 3 किमी0 की दूरी पर जाख देवता का मन्दिर स्थित है। जाख यानि यक्ष देवता के मन्दिर में बैशाख माह में मेला लगता है। जिसमें जाख देवता का माध्यम बनने वाला व्यक्ति दहकते अंगारों के ऊपर चलता है।

अनिरूद्ध मन्दिर (लमगौण्डी)- गुप्तकाशी-डडोली मार्ग पर लमगौण्डी में पुरातात्विक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण ग्रेफाइड पत्थर उत्कृष्ट प्रस्तर कला का उदाहरण अनिरुद्ध जी की मूर्ति एंव जर्जर मन्दिर पुराविदों को एकाएक अपने ओर आकर्षित करता है।

बौद्ध स्तूप(नाला)- गुप्तकाशी-गौरीकुण्ड मार्ग पर स्थान नाला में बौद्धस्तूप स्थित है। यह एक मात्र बौद्ध स्तूत है। जो कि उत्तराखण्ड में स्थित है। आदि गुरु शकराचार्य के यहां पहुंचने से पहले से यह क्षेत्र बौद्ध धर्म से आच्छादित था।

लक्ष्मीनारायण मन्दिर (नारायण कोटी)- रुद्रप्रयाग-गौरीकुण्ड मार्ग पर नारायण कोटी में लक्ष्मीनारायण का मन्दिर है। ऐसा माना जाता है कि प्राचीन काल में यहां भगवान विष्णु की एक करोड कुटीयायें (आश्रम) थे जिससे इस स्थान का नाम नारायण कोटी पड़ा। मन्दिर में भगवान विष्णु चर्तुभुज रूप में गरूड़ पर सवार प्रतिमा पुराविदों का प्रमुख आर्कषण है। मन्दिर के पास नवलिंग गढ़ के खण्डहर भी हैं । जो कि प्रचलित मान्यता के अनुसार किसी सामन्त का गढ़ रहा होगा।

सिर कटा गणेश मन्दिर- रूद्रप्रयाग-गौरीकुण्ड़ मार्ग पर सोनप्रयाग से 15 किमी0 आगे पेदल चलकर सिर कटा गणेश मन्दिर स्थित है। स्थानीय वोली में से इसे मुण्ड कट्या मन्दिर भी कहते है।

चीर वासा गणेश- रूद्रप्रायाग-गौरीकुण्ड मार्ग पर गौरीकुण्ड से तीन किलोमीटर आगे केदारनाथ पैदल मार्ग पर भैरवनाथ का प्राचीन मन्दिर है।

गरूड चट्टी-रूद्रप्रयाग- गौरीकुण्ड मार्ग पर गौरीकुण्ड से भी केदारनाथ पैदल मार्ग पर गरूड चट्टी स्थान जो कि 11000 फीट की ऊँचाई पर स्थित श्री केदारनाथ पूरी से पहले अन्तिम चट्टी यहाँ गरूड जी एंव लक्ष्मी जी के प्राचीन मन्दिर और हनुमान गुफा स्थित है।

अधिवास स्वरूप-मानव का उद्भव एंव विकास वस्तुतः भौगोलिक पर्यावरण का ही परिणाम है। मानव जीवन के लिए कतिपय आवश्यक परिस्थितियाँ होती है, जिसमें उसका विकास होता है। इसके विपरीत प्रतिकूल परिस्थितियों में उसके विकास की सम्भवानाएं कम हो जाती है। यही परिस्थितियां अधिवास के स्वरूप को भी प्रभावित करती है। स्पष्ट है कि अधिवास को प्रभावित करने वाले कारकों के वितरण में असमानता के कारण अधिवासों स्वरूप भी असमान है रेखीय व गोलाकार रूप में भी अधिवास पाये जाते हे ।

जनपद रूद्रप्रयाग के उत्तरी भाग की उपरी उपत्यकाओं में बिखरे हुए अधिवास छितरी हुए जनसंख्या दिखती हैं। भारत के संदर्भ में यदि मुल्यांकन किया जाय तो यह बहुत ही अल्प जनसख्यां एंव बिखरे हुए अधिवास वाले क्षेत्र है।

नदी-वेदिकाओं या बगडो वाला क्षेत्र (घना बसाव वाला क्षेत्र) इसके अन्तर्गत 500 से अधिक जनसख्यां वाला क्षेत्र सम्मिलित किये गये है। जिसमें मयकोटी न्याय पंचायत ,अगस्त्यमुनि न्याय पंचायत, पिपली न्याय पंचायत आदि आते है, जो कि अगस्त्यमुनि विकासखण्ड में सम्मिलित है।

मध्यम क्षेत्र घाटी (औसत बसाव वाला क्षेत्र) इसके अन्तर्गत 100 से 500 के मध्य जनसख्यां वाला भाग सम्मिलित किया गया है, जिसमें जनपद रूद्रप्रयाग के जखोली तथा ऊखीमठ विकासखण्ड आते है, जिसमें मनसूना , पंजाणा , स्यूंर बांगर आदि न्याय पंचायत सम्मिलित है।

निष्कर्ष

रूद्रप्रयाग जनपद का अधिकांश भूभाग मध्य एवं महानहिमालय में आता है जिसमें विभिन्न प्रकार की पर्वत श्रृखलाओं पर धार्मिक स्थल सांस्कृतिक धरोहर को संजोये हुए हैं। वर्तमान समय में उत्तराखण्ड की पहचान पर्यटन प्रदेश के रूप में बन रही है। यहां पर विभिन्न प्रकार के एतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा प्राकृतिक धरोहर विद्यमान है। जिन्हें अभी पूरी पहचान नहीं मिल पायी है। यदि प्राकृतिक सुन्दरता की दृष्टि से इन धार्मिक स्थलों को देखा जाय तो पर्यटकों का सैलाब इस ओर आकर्षित किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. कठोच, यशवन्त सिंह, 2007, गढ़वाल का इतिहास, भागीरथ प्रकाशन ग्रह, आंचलिक साहित्य प्रकाशक, टिहरी गढ़वाल।
2. नेगी, एस0 डी0, 1995, मन्दाकिनी घाटी: समाकलित क्षेत्रीय विकास का एक अध्ययन, अप्रकाशित शोध ग्रन्थ, हे0न0ब0ग0विश्वविघालय पृष्ठ संख्या 23
3. नैथानी, शिवप्रसाद, 2006, उत्तराखण्ड के तीर्थस्थल एवं मन्दिर, पवेत्री प्रकाशन, भक्तियाना, श्रीनगर पौड़ी गढ़वाल।
4. नैथानी, शिवप्रसाद, 2006, उत्तराखण्ड का सांस्कृतिक इतिहास, पवेत्री प्रकाशन, भक्तियाना, श्रीनगर पौड़ी गढ़वाल।
5. सिंह, सविन्द्र, 1995, भौतिक भूगोल, वसुन्धरा प्रकाशन, गोरखपुर, पेज नम्बर 32

6. Negi, S.Y., 1993] Energy resource of Mandakini Basin (Garhwal Himalaya) and their planing for Balanced Socio-Economic Development . Ph D Thesis Geography HNB Garhwal University Srinagar Garhwal (UP) P.2.
7. Shrma, Anita 1989] Geological study of population in chamoli district p. 2-3.